सारांश

शोध सारांश

प्रस्तावना :-

प्राचीन भारतीय शिक्षा का इतिहास वैदिक काल से प्रारम्भ होता है। इस शिक्षा प्रणाली का विस्तार काल ऋग्वेद के रचना काल से बौद्ध धर्म के आरम्भ के समय तक माना जाता है। वैदिक काल की अनेक उपकालों में वेदों की ही प्रधानता रही और शिक्षा के मूल आधार वेद ही रहे।

बौद्धकालीन शिक्षा के केन्द्र इस नगर क्षेत्र में स्थित होने का कोई भी उल्लेख प्राप्त नहीं है। लेकिन इस बात के प्रमाण हैं कि बौद्धकाल में जहाँ जिले के अनेक क्षेत्रों में बौद्ध मठ रहे वहीं नगर क्षेत्र में भी बौद्ध मठ था। देश में मुस्लिम साम्राज्य कायम होने के साथ ही जौनपुर भी उनके अधीन हुआ। शर्की मुसलमानों के शासन काल में मुस्लिम शिक्षा का विस्तार हुआ। मस्जिदों में मदरसा और मकतब स्थापित हुये। शर्की सुल्तान इब्राहिम शाह शर्की जब गद्दी पर बैठा तो उस समय दिल्ली अशान्त हो चली थी। बर्बर तैमूर लंग का दिल्ली पर हमला हुआ। तब तैमूर लंग के अत्याचारों से घबड़ाकर मुस्लिम विद्वान दिल्ली से भागकर जौनपुर आ गये और शर्की सुल्तानों की शरण में पनाह लिया। फलस्वरूप जौनपुर विद्या और कला का प्रमुख केन्द्र बन गया। इस्लाम धर्म, अरबी, फारसी दर्शन, संगीत, न्याय, इतिहास व गणित आदि विषयों की उच्च शिक्षा देने की व्यवस्था थी। देश–विदेश के छात्र यहाँ

शिक्षा ग्रहण करने आते थे। विद्वानों ने इसे 'शिराज–ए–हिन्द' की उपाधि से विभूषित किया। शेरशाह सूरी जैसे शासक ने यहाँ रहकर शिक्षा ग्रहण की। इब्राहिम शाह शर्की के शासन काल में 1400 पालकियों में बैठकर एक साथ विद्वान निकलते थे। मुगल शासन में बना शाही पुल अकबर महान की स्मृति को जौनपुर की धरती से जोड़े हुए है। अंग्रेजों ने अपने शासन काल में भारतीय संस्कृति व शिक्षा को विनष्ट करने का प्रयास शुरू कर दिया। लार्ड मैकाले की व्यवस्था लागू हो गयी। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति पर विद्यालयों की स्थापना की जाने लगी। इस तरह नगर क्षेत्र में सबसे पहला मिशन हाईस्कूल 1841 में स्थापित हुआ, जो बाद में 1944 में राजा श्रीकृष्णदत्त इण्टर कालेज एण्ड जौनपुर राजप्रियानाथ घोष हाईस्कूल के नाम से जाना जाने लगा। 1914 में स्व0 ठाकुर तिलकधारी सिंह ने अंग्रेजी मिडिल स्कूल की स्थापना की जो 1916 में हाईस्कूल हो गया।

जनपद–जौनपुर के शैक्षिक विकास पर कोई क्रमबद्ध अध्ययन नहीं हुआ है। जबकि इस जनपद की एक ऐतिहासिक परम्परा है और किसी जमाने में यह शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है। इसी दृष्टि को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जौनपुर–जनपद में शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर शोध करने का निश्चय किया गया।

समस्या कथन :-

"जौनपुर जनपद के माध्यमिक स्तर के शैक्षिक विकास का समीक्षात्मक अध्ययन।"

शोध उद्देश्य-

1. 1947 के पूर्व जौनपुर जनपद की शैक्षिक उपलब्धियों का सिंहावलोकन।
2. जनपद–जौनपुर के माध्यमिक स्तर के शिक्षा की स्थिति का निरूपण करना।
3. जनपद में शिक्षा के क्षेत्र में हुई प्रगति की समीक्षा करना।
4. जनपद में स्थित विभिन्न माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की समस्याओं का विश्लेषण।
5. जनपद के माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में अपेक्षित विकास न होने के कारणों का पता लगाना।

शोध विधि-

यह ऐतिहासिक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत व्यावहारिक उपागम द्वारा अध्ययन किया जायेगा एवं शोध–प्रबन्ध वर्णनात्मक तथा विवेचनात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया।

आँकड़ों के स्रोत-

प्रस्तुत शोध में जो आँकड़े प्रदर्शित किये गये हैं, उन्हें निम्नलिखित स्रोतों से संग्रहीत किया गया है–

1. जनपदीय गजेटियर, जौनपुर
2. जिला संख्याधिकारी कार्यालय, जौनपुर
3. जिला सूचना कार्यालय, जौनपुर
4. जिला जनगणना कार्यालय, जौनपुर

5. समय पत्रिका स्वर्ण जयन्ती विशेषांक

6. विकास पुस्तिका, जनपद जौनपुर द्वारा जिला सूचना कार्यालय, जौनपुर

7. जौनपुर का गौरवशाली इतिहास–डॉ0 शरतेन्दु

8. जौनपुर का इतिहास–त्रिपुरारी भास्कर

9. दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान

10. जौनपुर नामा–मौलवी नजरेउद्दीन अहमद

शोध निष्कर्ष-

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के फलस्वरूप शोधकर्ता निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुँचा था।

1. माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बढ़ी है।
2. माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों का पंजीकरण बढ़ा है।
3. जनपद में माध्यमिक स्तर पर सरकार द्वारा किया गया प्रयास जारी है।
4. जनपद के प्रबुद्ध तथा धनी वर्ग अपनी माध्यमिक संस्थायें चलाकर शिक्षा का प्रकाश फैला रहे हैं।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में भी माध्यमिक और उच्च माध्यमिक संस्थायें बढ़ी हैं।
6. माध्यमिक स्तर पर पहले से पूर्व, माध्यमिक विद्यालयों तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों की संख्या बढ़ी है।
7. माध्यमिक संस्थाओं में कुछ स्ववित्तीय और पहले की वित्तीय

संस्थायें आज और भी मजबूत हुई हैं।

8. जनसंख्या वृद्धि के साथ शिक्षा का स्तर भी बढ़ा है।

9. उच्च शिक्षा संस्थायें भी सर्वांगीण विकास हेतु प्रयासरत हैं।

10. जनपद जौनपुर में शिक्षा का प्रसार द्रुत गति से हुआ, परन्तु गुणात्मक शिक्षा में ह्रास हुआ।

11. बालिकायें भी शिक्षा की ओर जागरुक हुई और उन्हें छात्रों की तुलना में अधिक सफलता मिली।

12. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों में शिक्षा का प्रसार व्यापक नहीं हुआ।

13. प्राथमिक शिक्षा का स्तर गिरता रहा, जिससे उच्च कक्षाओं का स्तर भी प्रभावित हुआ।

14. शिक्षा को व्यवहारिक और जीवनोपयोगी नहीं बनाया गया।

15. आर्थिक दृष्टि से जनपद के पिछड़े होने के कारण विद्यालयों में समुचित भवन, साज, सज्जा एवं समुचित उपकरणों का अभाव।

16. शिक्षा में सैद्धान्तिक पक्ष पर जोर दिया जाता है। रचनात्मक कार्य पूर्णतया उपेक्षित रहता है। खेलकूद, सांस्कृतिक क्रिया–कलाप नहीं के बराबर है।

17. कुछ शिक्षण संस्थायें परीक्षा में अनैतिक व्यापार चलाती हैं, जिससे छात्रों में भ्रष्टाचार का बीज पनप रहा होता है।

18. सबके लिए शिक्षा का सुलभ होना जिसके कारण प्रथम पीढ़ी के छात्रों के शैक्षिक स्तर में न्यूनता।

19. जनसामान्य में शिक्षा के प्रति चेतना एवं अभिरुचि का अभाव।

20. राजनीतिज्ञों द्वारा शिक्षा की स्थिति को महत्व न देना तथा उनके द्वारा शिक्षाविदों की उपेक्षा।

21. चारित्रिक दृष्टि से अभिभावकों में नैतिकता का अभाव एवं कर्तव्य की उपेक्षा।

22. जनपद जौनपुर की शैक्षिक पृष्ठभूमि उर्वर रही है। मध्यकाल में यह इस्लामिक शिक्षा का केन्द्र रहा। अरबी, फारसी, उर्दू के धुरन्धर विद्वानों का जौनपुर केन्द्र था। संस्कृत, हिन्दी के ख्याति प्राप्त कवियों की यह भूमि रही। इसका व्यापक प्रभाव यहाँ के जनमानस पर पड़ा। आधुनिक शिक्षा का प्रकाश फैलते ही जनमानस जागरूक हो उठा। कवियों, लेखकों, साहित्यकारों एवं विचारकों द्वारा यहाँ की धरती गौरवान्वित हुई।

23. बालिकाओं की शिक्षा की संतोषजनक स्थिति नहीं है। बालिकाओं के विद्यालयों की संख्या कम है।

24. दलित वर्ग और पिछड़ी जातियों में शिक्षा का व्यापक प्रसार नहीं हुआ।

25. तकनीकी शिक्षा की व्यवस्था विश्वविद्यालय में तथा पालिटेक्निक और औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में की गई, परन्तु जनपद की अपेक्षाओं को देखते हुए यह अपर्याप्त है। तकनीकी शिक्षा के अधिक विस्तार की आवश्यकता है।

26. जनपद जौनपुर की भूमि कृषि के लिए उपयुक्त और उर्वर है।

फल–सब्जियाँ यहाँ प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होती हैं। इन पर आधारित उद्योग यहाँ खोले जा सकते हैं। इसके लिए उपयोगी तकनीकी प्रशिक्षण के विद्यालय खोले जायं तो शिक्षित नवयुवकों के रोजगार की संभावनायें बढ़ सकती हैं।

27. निःसन्देह जनपद में पब्लिक स्कूल अच्छी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं, किन्तु अच्छी शिक्षा की ओट में ये विद्यालय जनता का भरपूर शोषण कर रहे हैं। जहाँ पर उदारचेता लोग समाज सेवा की भावना से विद्यालय चलाते थे, वहीं ये शिक्षण माफिया व्यवसाय चला रहे हैं और राष्ट्र की समाजवादी व्यवस्था को ठेंगा दिखा रहे हैं। शासन को इनके शोषण पर अंकुश लगाना चाहिये। साथ ही साथ सरकारी और सहायता प्राप्त विद्यालयों का वातावरण भी चुस्त–दुरूस्त बनाना होगा, ताकि विद्यार्थी पब्लिक विद्यालयों के व्यमोह में न उलझें।

28. कुछ संस्कृत पाठशालायें और इस्लामिक मकतब और मदरसे भी जनपद में चल रहे हैं, जिन पर रूढ़िवादिता और साम्प्रदायिक संकीर्णता का आरोप लगाया जाता है। शासन को चाहिए कि इन पर भी निगरानी रखें और आधुनिक विषयों का वहाँ भी समावेश किया जाय, जिससे राष्ट्र के धर्म निरपेक्ष प्रजातान्त्रिक मूल्यों की रक्षा हो सके।

29. सभी बालकों का बौद्धिक स्तर मानसिक अभिरुचियाँ समान नहीं होती। कुछ बालक मन्द बुद्धि या अति सामान्य बुद्धि के होते हैं,

जो क्लिष्ट सैद्धान्तिक विषयों की अवधारणा और अमूर्त चिन्तन नहीं कर सकते, किन्तु उनमें शिल्प, कला कौशल, संगीत, खेल कूद, कृषि, बागवानी, फल संरक्षण जैसे मूर्त विज्ञान समझने की क्षमतायें होती हैं। अतः मनोवैज्ञानिक परीक्षाओं द्वारा इन बालकों का चयन कर उनके लिये अलग पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाना चाहिए। उनके लिए पृथक विद्यालय खोले जाने चाहिए, जिनमें सरल सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम के साथ शिल्प, मैकेनिकल, शिक्षा, कृषि, बागवानी, कढ़ाई एवं सिलाई आदि की शिक्षा होनी चाहिए। यद्यपि यह भारत जैसे देश के लिए असम्भव है, फिर भी यदि प्रयास किया जाय तो श्रेयस्कर होगा। बालकों के समान पाठ्यक्रम, समान शिक्षा का सिद्धान्त अमनोवैज्ञानिक है।

30. स्वास्थ्य का गठन भी शिक्षा का एक अंग है। इसके लिए विद्यालय में व्यायाम शिक्षक भी नियुक्त होते हैं और शिक्षण में शारीरिक शिक्षा के लिए घण्टे भी आवंटित होते हैं परन्तु वस्तुतः विद्यालयों में स्वास्थ्य शिक्षा का पक्ष अपेक्षित रहता है। विद्यालय में खेल–कूद के उपकरणों की भी समुचित व्यवस्था नहीं रहती है। उत्तम स्वास्थ्य के बिना उत्तम शिक्षा और उत्तम नागरिकता नहीं उत्पन्न हो सकती है। राष्ट्र के विकास के नागरिकों के उत्तम स्वास्थ्य का होना अपरिहार्य तत्व है।

शैक्षिक महत्व :-

जनपद के माध्यमिक विद्यालयों की दशा शोचनीय है। विद्यालय में शैक्षिक उपकरणों का अभाव, अपर्याप्त भवन, छात्रों और अध्यापकों की संख्या का असन्तुलित अनुपात आदि विसंगतियों के कारण विद्यालय का वातावरण छात्रों के लिए अनाकर्षक होता है। ये सरकारी विद्यालय छात्रों और अभिभावकों को सन्तुष्ट नहीं कर पाते।

माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा व्यवस्था और अनुशासन अच्छा नहीं है। अधिकांश विद्यालयों में मध्याह्न–अवकाश के बाद कक्षायें खाली हो जाती हैं और शिक्षण बाधित होता है। शोध के निष्कर्ष से स्पष्ट है कि उपयुक्त शिक्षण के अभाव में छात्र परीक्षा के समय आत्मबल खो देते हैं और नकल के सहारे परीक्षा उत्तीर्ण करने की सोचते हैं। छात्रों की इस प्रवृत्ति का कुछ अध्यापक अनुचित लाभ उठाते हैं। परीक्षा केन्द्रों पर आदर्शों के प्रचेता शिक्षक मर्यादा की सभी सीमाओं का उल्लंघन कर नकल व्यवसाय में लिप्त हो जाते हैं। कहीं प्रधानाचार्य, शिक्षक, प्रबन्धक और अभिभावक सभी की मिलीभगत से छात्रों से पैसा वसूलकर उत्तीर्ण कराने का ठेका लिया जाता है। इसके लिए परीक्षार्थियों से परीक्षा पूर्व ही एक मुश्त नकद धनराशि वसूल कर ली जाती है। बहुत से परीक्षा केन्द्र परीक्षा उत्तीर्ण कराने के लिए अन्तर्जनपदीय परीक्षा केन्द्र के रूप में कुख्यात हैं। नकल की प्रवृत्ति को रोकने के लिए प्रशासन ने सख्त नियम बनाये है, फिर भी पूर्ण नियन्त्रण नहीं हो पा रहा है।

निष्कर्षों से ज्ञात होता है कि प्रचलित शिक्षा पद्धति छात्रों को एक संगणक मानकर चल रही है, जिसके मस्तिष्क में सूचनाओं, तथ्यों और विषयवस्तु का संग्रह कर देना ही लक्ष्य रह गया है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास की प्राचीन अवधारणा अब पीछे छूट गई है।

छात्रों में नैतिक चरित्र का विकास और उत्तम स्वास्थ्य का निर्माण अब शिक्षा में अतीत की कहानी बन गई है। विद्यालयों में खेल–कूद, व्यायाम तथा संस्कृति कार्यक्रम अपेक्षित हो गये हैं, जो अनुशासन और भावात्मक परिष्कार के लिए उपयोगी थे। शिक्षा से बौद्धिक विकास अवश्य हो रहा है, किन्तु छात्रों का भाव पक्ष संकीर्ण हो रहा है। शिक्षा का लक्ष्य नौकरी और अर्थोपार्जन ही रह गया है।